BPAC-107

तुलनात्मक लोक प्रशासन

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

विशेषज्ञ समिति

प्रो. सी. वी. राघावुलु,
नागार्जुन विश्वविद्यालय
के पूर्व कुलपति,
गुंटूर (आंध्र प्रदेश)

प्रो. रमेश के. अरोड़ा
लोक प्रशासन के पूर्व प्रोफेसर
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

प्रो. ओ. पी. मिनोचा
लोक प्रशासन के पूर्व प्रोफेसर,
भारतीय लोक प्रशासन संस्थान,
नई दिल्ली।

प्रो. अरविन्द के. शर्मा
लोक प्रशासन के पूर्व प्रोफेसर,
भारतीय लोक प्रशासन संस्थान,
नई दिल्ली।

प्रो. आर. के. सप्रू
लोक प्रशासन के पूर्व प्रोफेसर
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़।

प्रो. साहिब सिंह भयाना
लोक प्रशासन के पूर्व प्रोफेसर
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ।

प्रो. बी. बी. गोयल
लोक प्रशासन के पूर्व प्रोफेसर
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ।

प्रो. रवीन्द्र कौर
लोक प्रशासन विभाग
उसमानिया विश्वविद्यालय
हैदराबाद।

प्रो. सी. वैंकटैया
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर
मुक्त विश्वविद्यालय
हैदराबाद।

प्रो. जी. पलनीथुराई
राजनीति विज्ञान और विकास प्रशासन विभाग, घंधीग्राम ग्रामीण विश्वविद्यालय, घंधीग्राम

प्रो. रमनजीत कौर जोहल
यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ ओपन लर्निगं,
पजांब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़।

प्रो. राजबंस सिंह गिल
लोक प्रशासन विभाग
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला।

प्रो. मंजूशा शर्मा
लोक प्रशासन विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।

प्रो. लालनिहज़ोवी
लोक प्रशासन विभाग
मिज़ोरम केद्रींय विश्वविद्यालय

प्रो. निलिमा देशमुख
लोक प्रशासन की पूर्व प्रोफेसर
राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय नागपुर।

प्रो. राजवीर शर्मा
महाराजा अग्रसेन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनजमेंट स्टडीज, दिल्ली।

प्रो. संजीव कुमार महाजन
लोक प्रशासन विभाग
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
शिमला।

प्रो. मनोज दीक्षित
लोक प्रशासन विभाग, लखनऊ
विश्वविद्यालय लखनऊ।

प्रो. सुधा मोहन
नागरिकशास्त्र और राजनीति विभाग, मुबंई विश्वविद्यालय, मुबंई।

इग्नू संकाय

प्रो. प्रदीप साहनी
प्रो. ई वायुनदंन
प्रो. उमा मेडूरी
प्रो. अलका धमेजा
प्रो. डॉली मैथ्यू
प्रो. दुर्गेश नंदिनी

सलाहकार

डॉ. संध्या चोपड़ा
डॉ. ए. सेंथमीज़ कनल

संयोजक

प्रो. डॉली मैथ्यू
प्रो. दुर्गेश नंदिनी

पाठ्यक्रम समन्वयकः प्रो. डॉली मैथ्यू, सामाजिक विज्ञान विध्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम संपादकः (सामग्री, प्रारूप और भाषा). प्रो. डॉली मैथ्यू, सामाजिक विज्ञान विध्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

सामग्री निर्माण

श्री तिलक राज
सहायक कुलसचिव
एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली

सितंबर, 2021

© *इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2021*

ISBN:_________________

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश किसी भी रूप में पुनः प्रकाशित नहीं किया जा सकता, अनुलिपिक या किसी अन्य साधन द्वारा, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के बिना किसी लिखित आदेश व पुनः इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कोर्स की सूचना विश्वविद्यालय के मैदान गढ़ी कार्यालय, नई दिल्ली–110068 के द्वारा प्राप्त की जा सकती है अथवा विश्वविद्यालय की वेबसाइट http://www.ignou.ac.in देखें

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली की ओर से कुलसचिव, सा. नि. वि. प्र. द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

मुद्रित : ऐजुकेशनल स्टोर्स, एस–5 बुलन्दशहर रोड इण्डस्ट्रीयल एरिया, साईट–1 गाजियाबाद (उ.प्र.)–201009

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

पाठ्यक्रम तैयारी दल

इकाई	खंड	इकाई लेखक
खंड 1	**तुलनात्मक लोक प्रशासनः एक परिचय**	
इकाई 1	तुलनात्मक लोक प्रशासनः अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र व महत्व	प्रो. रमेश के. अरोरा, लोक प्रशासन के पूर्व प्रोफेसर, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
खंड 2	**तुलनात्मक लोक प्रशासन के अध्ययन में प्रयुक्त विभिन्न अभिगम**	
इकाई 2	अधिकारियतंत्रीय अभिगम	प्रो. रमेश के. अरोरा, लोक प्रशासन के पूर्व प्रोफेसर, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
इकाई 3	व्यवहारवादी अभिगम	
इकाई 4	सामान्य प्रणाली अभिगम	
इकाई 5	संरचनात्मक कार्यात्मक अभिगम	
खंड 3	**विकसित और विकासशील देशों में प्रणालियाँ**	
इकाई 6	पारिस्थितिकीय अभिगम	प्रो. रमेश के. अरोरा, लोक प्रशासन के पूर्व प्रोफेसर, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
इकाई 7	विकसित देशों की राजनैतिक व प्रशासनिक प्रणालियाँ	
इकाई 8	विकासशील देशों की राजनैतिक तथा प्रशासनिक प्रणालियाँ	
खंड 4	**नब्बे के दशक के बाद से पुनरूत्थान**	
इकाई 9	फ्रेड रिग्ज़ का विकासशील देशों के लिए प्रशासनिक प्रतिमान	प्रो. रमेश के. अरोरा, लोक प्रशासन के पूर्व प्रोफेसर, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
इकाई 10	तुलनात्मक लोक प्रशासन में बौद्धिक विकास	

मुद्रण उत्पादन

आवरण रचना

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

पाठ्यक्रम विषय–सूची

पाठ्यक्रम परिचय		पृष्ठ
खंड 1	**तुलनात्मक लोक प्रशासनः एक परिचय**	**7**
इकाई 1	तुलनात्मक लोक प्रशासनः अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र व महत्व	9
खंड 2	**तुलनात्मक लोक प्रशासन के अध्ययन में प्रयुक्त विभिन्न अभिगम**	**15**
इकाई 2	अधिकारियतंत्रीय अभिगम	17
इकाई 3	व्यवहारवादी अभिगम	28
इकाई 4	सामान्य प्रणाली अभिगम	35
इकाई 5	संरचनात्मक कार्यात्मक अभिगम	39
खंड 3	**विकसित और विकासशील देशों में प्रणालियाँ**	**43**
इकाई 6	पारिस्थितिकीय अभिगम	45
इकाई 7	विकसित देशों की राजनैतिक व प्रशासनिक प्रणालियाँ	48
इकाई 8	विकासशील देशों की राजनैतिक तथा प्रशासनिक प्रणालियाँ	63
खंड 4	**नब्बे के दशक के बाद से पुनरूत्थान**	**79**
इकाई 9	फ्रेड रिग्ज़ का विकासशील देशों के लिए प्रशासनिक प्रतिमान	81
इकाई 10	तुलनात्मक लोक प्रशासन में बौद्धिक विकास	91

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

खंड

1

तुलनात्मक लोक प्रशासनः एक परिचय

इकाई 1

तुलनात्मक लोक प्रशासनः अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र व महत्व 9

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 1 : तुलनात्मक लोक प्रशासनः अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र व महत्व

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 तुलनात्मक लोक प्रशासनः अर्थ

1.3 तुलनात्मक लोक प्रशासन की प्रकृति और क्षेत्र

1.4 तुलनात्मक लोक प्रशासन का महत्व

1.5 सारांश

1.6 संदर्भ

1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- तुलनात्मक लोक प्रशासन के अर्थ पर चर्चा कर सकेंगे;
- तुलनात्मक लोक प्रशासन की प्रकृति की व्याख्या कर सकेंगे;
- तुलनात्मक लोक प्रशासन के क्षेत्र व महत्व का वर्णन कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

यह इकाई तुलनात्मक लोक प्रशासन के अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र व महत्व पर चर्चा करेगी।

1.2 तुलनात्मक लोक प्रशासनः अर्थ

वस्तुतः किसी भी व्यवस्थित व्याख्या–प्रक्रिया के लिये क्रमबद्ध तुलना आवश्यक मानी जाती है। इसका मूल कारण यह है कि गैर–तुलनात्मक वर्णन तथा व्याख्या किसी भी वैज्ञानिक विषय के विकास में अपेक्षाकृत कम योगदान देती है। इमैल दुरखीम (Emile Durkheim) का यह कथन सही प्रतीत होता है कि किसी भी जटिल सामाजिक तथ्य की सुसंगत व्याख्या तुलनात्मक पद्धति के प्रयोग के बिना सम्भव नहीं है।

शमुसल आइसनस्टाड्ट (Shmuel Eisenstadt) मतानुसार तुलनात्मक अभिगम, कतिपय विरोधी दावों के बावजूद, सामाजिक अनुसन्धान की कोई विशिष्ट प्रक्रिया नहीं, अपितु इसके बजाय वह संकर–सामाजिक और संकर–सांस्थानिक विश्लेषणों पर एक विशेष बल है। यह विचारणीय है कि तुलनात्मक अभिगम के अन्तर्गत सामाजिक अनुसन्धान कई रूप ग्रहण कर सकता है। उदाहरणस्वरूप, यह अन्तर–सांस्कृतिक हो सकता है, जिसमें दो अथवा अधिक संस्कृतियों में स्थित सामाजिक संस्थाओं की तुलना हो सकती है; यह संकर–राष्ट्रीय और अन्तरा–सांस्कृतिक हो सकता है, जिसमें एक ही सांस्कृतिक क्षेत्र के दो अथवा अधिक राष्ट्रों में स्थित सामाजिक संस्थाओं की तुलना हो; यह संकर–सांस्थानिक (Hybrid Institute) हो सकता है, जिसमें एक ही राष्ट्र में स्थित विभिन्न सामाजिक संस्थाओं की तुलना की जाय; एवं यह संकर–कालिक हो सकता है, जिसमें दो विभिन्न कालों में विद्यमान सामाजिक संस्थानों की तुलना की जाय।

यहाँ 'संस्कृति' शब्द का अर्थ समाज के केवल मूल्य, कला, साहित्य आदि से नहीं है, अपितु इसका अभिप्राय एक क्षेत्र की सम्पूर्ण पारिस्थितिकी से है, जिसमें राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, एवं आर्थिक पर्यावरण भी सम्मिलित है। अतः कुछ अन्तराल के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका, ग्रेट–ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, तथा आस्ट्रेलिया एक ही संस्कृति–जिसे 'पाश्चात्य संस्कृति' कहा जाता है–के अंग माने गए । उसी प्रकार भारत, पाकिस्तान, ईरान, मिस्र, नाईजीरिया, मलेशिया को पारस्परिक विविधताओं के बावजूद एक ही संस्कृति का अंग माना गया।

प्रसिद्ध विद्वान एडवर्ड शिल्स (Edward Shils) का मत है कि कोई भी अन्वेषण तुलनात्मक तभी माना जा सकता है, जब वह विभिन्न समाजों की सुसंगत तुलना हेतु एक विश्लेषणात्मक रूपरेखा का उपयोग करें तथा जिसकी सैद्धान्तिक श्रेणियों की सहायता से विभिन्न समाजों की विशिष्टताओं एवं अद्वितीयताओं की समुचित व्याख्या की जा सके।

आज सामाजिक विज्ञानों में प्रयुक्त तुलनात्मक विश्लेषण संकुचित सांस्कृतिक सीमा रेखाओं को पार कर चुका है। साथ ही, 'तुलनात्मक क्रान्ति' के अन्तर्गत सैद्धान्तिक निर्मितियों को अधिक वैज्ञानिक रूप प्रदान करने का प्रयत्न जारी है। समस्त आधुनिक सामाजिक विज्ञानों में तुलनात्मक विश्लेषण की प्रभावशीलता स्वीकार की जा चुकी है, सच तो यह है कि तुलनात्मक सामाजिक विश्लेषण आधुनिक सामाजिक विज्ञान के विकास के साथ गुथा हुआ है, जिसके जनक हर्बर्ट स्पेंसर, विल्फ्रेड परेटो, इमैल दुरखीम, और मैक्स वेबर जैसे तुलनात्मक समाजशास्त्री थे।

तुलनात्मक लोक प्रशासन की मान्यताएँ

रॉबर्ट जैक्सन (Robert Jackson) ने तुलनात्मक लोक प्रशासन की चार मान्यताएँ दी हैः

1. लोक प्रशासन विज्ञान प्राप्ति योग्य है, यद्यपि, यह पूर्णतया निष्पाद्य नहीं है। हालांकि, इस बात पर व्यापक सहमति है कि प्रशासनिक व्यवहार की ऐसी भी प्रवृत्तियाँ हैं, जो व्यवस्थित विश्लेषण के लिए सुप्रभाव्य हैं, तथा जो सिद्धान्तों की संरचना में सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

2. लोक प्रशासन के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए प्रशासनिक पद्धतियों का संकर–सांस्कृतिक और संकर–राष्ट्रीय सन्दर्भ में अनुसन्धान किया जाना चाहिये।

3. इस प्रकार के संकर–सांस्कृतिक अध्ययनों से प्राप्त अनुभव–मूलक निष्कर्षों को तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से परीक्षित किया जाना चाहिये।

4. ऐसी आशा की जा सकती है कि इस प्रकार का तुलनात्मक विश्लेषण प्रायोगिकता और सार्वभौमिकता के लिए प्रशासनिक प्रतिरूपों से सम्बन्धित परिकल्पनाओं के निर्माण में सहायक सिद्ध होगा। अन्ततः इस प्रकार की प्रतिज्ञप्तियों को लोक प्रशासन के सामान्य सिद्धान्तों में एकीकृत किया जा सकेगा।

यह उल्लेखनीय है कि तुलनात्मक लोक प्रशासन के लक्ष्य के सम्बन्ध में व्यापक रूप से सहमति पाई जाती है। तुलनात्मक प्रशासन दल (कम्परेटिव एडमिनिस्ट्रेशन ग्रुप) ने तुलनात्मक लोक प्रशासन को इस प्रकार परिभाषित किया हैः ''विभिन्न संस्कृतियों तथा राष्ट्रीय विन्यासों में प्रयुक्त हुए लोक प्रशासन के सिद्धान्त और वह तथ्यात्मक सामग्री, जिसके द्वारा इनका विस्तार और परीक्षण किया जा सकता है,'' तुलनात्मक लोक प्रशासन के अंग है। फ्रेंड रिग्ज़ के इस कथन में तुलनात्मक लोक प्रशासन के सिद्धान्त–निर्माण की प्रक्रिया पर बल स्पष्ट है, कि ''वास्तविक'' तुलनात्मक अध्ययन

वह है, जो निश्चित रूप से अनुभव सम्बन्धी, 'नोमोथैटिक', तथा पारिस्थितिकीय हो। 'नोमोथैटिक' से रिग्ज़ का अभिप्राय उस अभिगम से है, जो मुख्यतः सिद्धान्त–निर्माण से सम्बद्ध हो।

अब हम तुलनात्मक लोक प्रशासन की प्रकृति के बारे में चर्चा करेंगे।

1.3 तुलनात्मक लोक प्रशासन की प्रकृति और क्षेत्र

सामान्य शब्दों में तुलनात्मक लोक प्रशासन से तात्पर्य ऐसे विषय से है, जिसके अन्तर्गत दो अथवा दो से अधिक प्रशासनिक इकाइयों की संरचना एवं कार्यात्मकता की तुलना की जाय। स्वरूप में, यह तुलना अन्तरा–राष्ट्रीय हो सकती है, जैसे राजस्थान एवं उत्तर प्रदेश के सचिवालयों की तुलना; संकर–राष्ट्रीय हो सकती है, जैसे भारत एवं श्रीलंका में नगर प्रशासन की तुलना; अन्तःसांस्कृतिक हो सकती है, जैसे ग्रेट ब्रिटेन एवं फ्रांस की प्रशिक्षण व्यवस्था की तुलना; संकर–सांस्कृतिक हो सकती है, जैसे नेपाल के बजट प्रशासन की रूस के बजट प्रशासन से तुलना; एवं संकर–सामयिक हो सकती है, जैसे चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के प्रशासन की अकबर के प्रशासन से तुलना। तुलना के विभिन्न स्वरूप स्पष्ट करते हैं कि आधुनिक तुलनात्मक लोक प्रशासन का क्रिया–क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत हो गया है। तथापि, सामान्य रूप से, तुलनात्मक लोक प्रशासन विषय के अन्तर्गत लोक प्रशासनिक संरचनाओं को संकर–राष्ट्रीय एवं संकर सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यों में तुलनात्मक विश्लेषण के लिए सम्मिलित किया जाता है। आइए अब हम इसके क्षेत्र की बात करें।

रिग्ज़ ने अपने एक लेख में कहा है कि लोक प्रशासन के तुलनात्मक अध्ययन में तीन प्रवृत्तियाँ देखी जा सकती हैः

1. आदर्शात्मक से अनुभव सम्बन्धी (Normative to Empirical) उन्मुखता;
2. 'इडियोग्राफिक' से 'नोमोथैटिक' (Ideographic to Nomothetic) अभिगम की ओर उन्मुखता; एवं
3. गैर–पारिस्थितिकीय से पारिस्थितिकीय (Non-ecological to Ecological) उन्मुखता।

- आदर्शात्मक अध्ययनों से तात्पर्य उन अध्ययनों से है, जिनमें प्रशासन–तन्त्र द्वारा कतिपय अभीष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने की वांछनीयता पर बल दिया जाता है, तथा जिनका अधिकांश विश्लेषण 'क्या होना चाहिए' के आधार–वाक्य पर केन्द्रित होता है। पारम्परिक तुलनात्मक लोक प्रशासन के अध्ययनों में आदर्शात्मकता एवं निर्देशात्मकता की यह विशेषता मुख्य रूप से पाई जाती थी।

- व्यवहारवादी आन्दोलन ने लोक प्रशासन के अध्ययनों को निर्देशात्मकता से दूर ले जाने का प्रयत्न किया है, तथा प्रशासनिक अनुसन्धान में अनुभव सम्बन्धी बातों पर बल दिया है। अनुभव–सम्बन्धी उन्मुखता–युक्त अध्ययनों में 'प्रशासनिक वास्तविकता' को समझने का प्रयत्न किया जाता है, तथा इस सन्दर्भ में तथ्यों के संग्रहण अथवा 'क्या है' के आधार–वाक्य को ही केन्द्रीय स्थान दिया जाता है। रिग्ज़ का मत है कि शनैः शनैः तुलनात्मक लोक प्रशासन के अध्ययन अपने पारम्परिक आदर्शात्मक स्वरूप को त्याग कर अनुभव सम्बन्धी विशेषताएं ग्रहण कर रहे हैं।

- 'इडियोग्राफिक' तथा 'नोमोथैटिक' शब्द विशेष रूप से रिग्ज़ द्वारा रचित हैं। 'इडियोग्राफिक' अध्ययन किसी एक विशेष ऐतिहासिक घटना, एक

विशेष प्रशासनिक समस्या, एक विशेष संस्था, एक विशेष राष्ट्र, एक विशेष सांस्कृतिक क्षेत्र, अथवा एक विशेष जीवनी से सम्बन्धित होते हैं। फलतः इन अध्ययनों में प्रशासनिक विश्लेषण की विषय–वस्तु कोई एक विशिष्ट इकाई होती है। दूसरी ओर, 'नोमोथैटिक' अभिगम ऐसे सामान्यीकरणों तथा परिकल्पनाओं के निर्माण का प्रयत्न करता है, जो व्यवहार की नियमितताओं एवं घटकों के सह–सम्बन्धों को प्रतिपादित करते हैं। नोमोथैटिक अध्ययनों में गहन तुलनात्मक विश्लेषण पर आधारित सिद्धान्त–निर्माण की प्रक्रिया पर बल दिया जाता है। रिग्ज़ का मत है कि तुलनात्मक लोक प्रशासन अपने पारम्परिक 'इडियोग्राफिक' रूप को छोड़कर 'नोमोथैटिक' रूप ग्रहण कर रहा है।

- रिग्ज़ द्वारा सुझाई गई तीसरी प्रवृत्ति पारिस्थितिकीय परिप्रेक्ष्य से सम्बन्धित है। उनके अनुसार, पारम्परिक अध्ययनों में प्रशासनिक संस्थाओं का विश्लेषण उनके आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि पर्यावरणों के सन्दर्भ में कम किया जाता था। अतः उनमें पर्यावरण के प्रशासन पर प्रभाव तथा प्रशासन के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण बहुत कम था। किन्तु, अब यह स्वीकारा जाता है, कि गतिशील पर्यावरणों में कार्यरत प्रशासनिक संस्थानों का वास्तविक व्यवहार बिना उनकी पारिस्थितिकी के सन्दर्भ के नहीं समझा जा सकता। फलस्वरूप, आधुनिक तुलनात्मक लोक प्रशासन के अध्ययनों में प्रशासन तथा उसके पर्यावरण के बीच होने वाली गत्यात्मक अन्तर–क्रियाओं का गहन विश्लेषण करने का प्रयत्न किया जाता है।

1.4 तुलनात्मक लोक प्रशासन का महत्व

तुलनात्मक लोक प्रशासन के अध्ययन के निम्नलिखित प्रयोजन कहे जा सकते हैं :

1. किसी विशिष्ट प्रशासनिक प्रणाली अथवा प्रणाली–समूहों की विशिष्टताओं का अध्ययन;
2. प्रशासनिक व्यवहार में संकर–सांस्कृतिक और संकर–राष्ट्रीय भिन्नताओं के लिए उत्तरदायी घटकों की व्याख्या करना;
3. किसी विशिष्ट पारिस्थितिक विन्यास में विशिष्ट प्रशासनिक रूपों की सफलताओं एवं असफलताओं के कारणों की जांच–पड़ताल करना; एवं
4. प्रशासनिक सुधारों की कार्य नीति को समझना।

उपरोक्त प्रयोजनों में अनुभवमूलक और आदर्शात्मक विचारों का समिश्रण है, जो तुलनात्मक लोक प्रशासन के विश्लेषण से सम्बन्धित साहित्य में प्रतिबिम्बित है। अन्य शब्दों में, तुलनात्मक प्रशासन के अध्ययन के दो प्रकार के मुख्य प्रयोजन हैः एक, प्रशासनिक विज्ञान का निर्माण, तथा दूसरा, नीति–प्रक्रिया में अन्य देशों की प्रशासनिक संस्थाओं के बारे में ज्ञान की सहायता से सुधार लाना।

गतिविधि

भारतीय लोक प्रशासन का अध्ययन संकर–राष्ट्रीय तथा संकर–सांस्कृतिक है। राय प्रकट कीजिए।

1.5 सारांश

स्पष्ट है कि, विज्ञानों में 'वैज्ञानिकता' के तत्त्वों की वृद्धि का आधार, 'वास्तविक' तुलनात्मक विश्लेषण ही हो सकता है। लोक प्रशासन के अध्ययन के वैज्ञानिकीकरण

हेतु प्रशासनिक संरचनाओं के व्यवहार सम्बन्धी परिकल्पनाओं को संकर–राष्ट्रीय तथा संकर–सांस्कृतिक विन्यासों में परीक्षित करना आवश्यक है। वास्तव में, तुलनात्मक लोक प्रशासन में सिद्धान्त–निर्माण के उपक्रम की यही मान्यता है। वर्तमान में, लोक प्रशासन का तुलनात्मक अध्ययन अपनी पारम्परिक विशेषताओं–आदर्शात्मकता, विशिष्ट इकाई विश्लेषण, एवं गैर–पारिस्थितिकी उन्मुखता–को धीरे–धीरे छोड़ आनुभविक, सिद्धान्त निर्माण, एवं पारिस्थितिकी–उन्मुखता के लक्षणों को ग्रहण कर रहा है। तथापि, यह उल्लेखनीय है कि वर्तमान काल में तुलनात्मक लोक प्रशासनों के अध्ययनों में –पारम्परिक एवं आधुनिक–दोनों विशेषताओं का संश्लेषण देखने को मिलता हैं।

1.6 संदर्भ

Arora, Ramesh K. 2021. Comparative Public Administration: An Ecological Perspective. New Delhi: New Age International.

Heady, Ferrel. 1995. Public Administration: A Comparative Perspective. New York: Marcel Dekker.

Henry, Nicholas. 2004. Public Administration and Public Affairs. Upper Sadle River, N.J.: Pearson.

Sahni, Pradeep and E. Vayunandan. 2009. Administrative Theory. New Delhi: Prentice-Hall.

Waldo, Dwight. 1955. The Study of Public Administration. New York: Double day.

❖❖❖❖❖❖

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY